B.M.A. College, Baheri, Darbhanga

Deptt. of Sociology
Date: 27/5/20

B.A. (Socio. Hons), Part- II
By: Dr. Rajesh Kr.
Sociology

Paper- IV (सामाजिक अनुसंधान)

विषय:- निदर्शन के प्रकार

सामान्य तौर पर निदर्शन के दो प्रकार माने जाते हैं:- 1. संभावित एवं 2. असंभावित निदर्शन। जबकि संभावित निदर्शन वह है जब पूरे जनसंख्या में सभी इकाई समान होती है एवं सभी के एक समान चुने जाने की संभावना होती है, उसे संभावित निदर्शन कहते है। दूसरी ओर, पूरी जनसंख्या में जब सभी इकाईयाँ असमान होती है एवं सभी की चुने जाने की संभावना भी असमान होती है तो उसे असंभावित निदर्शन कहते हैं।

संभावित निदर्शन के अन्तर्गत निम्न प्रकार के निदर्शन आते हैं

- दैव-निदर्शन पद्धति: दैव-निदर्शन विधि में अनुसंधान के पद्धति जैसे लॉटरी विधि, टिप्पेट विधि, ग्रिड विधि इत्यादि द्वारा चुना जाना जाता है।
  - लॉटरी विधि: यह एक ऐसी विधि है जिसमें समूह के प्रत्येक इकाईओं के लिए एक पर्चा बनाई जाता है और उसे किसी मटके या बॉक्स डाल दिया जाता है और किसी को भी एक पर्चा या आवश्यकता के अनुसार निकालने के लिए कहा जाता है। और यही चुना गया पर्चा निदर्शन होता है।
  - ग्रिड-विधि - इस विधि का प्रयोग विशेषकर राजनीतिक क्षेत्र के सदस्यों के चुनाव के लिए किया जाता है। जब एक क्षेत्र में समान योग्यता वाले दो या दो अधिक सदस्य पाए जाते हैं तो उनका चुनाव इसी विधि से किया जाता है। सर्वप्रथम एक सेल्यूलाइड की पट्टी एवं उस क्षेत्र का नक्शा लिया जाता है तत्पश्चात् नक्शे के ऊपर उस सेल्यूलाइड की पट्टी को रखा जाता है, पट्टी रखने से पहले उस सेल्यूलाइड की पट्टी पर सभी सदस्यों के नाम विभिन्न जगहो पर लिख दिए जाते हैं और पट्टी को नक्शे के बराबर वाले भाग में रखा जाता है, जिस उम्मीदवार का नाम नक्शे के विशेष क्षेत्र के सामने चिन्हित होता है उसी को उस क्षेत्र का सदस्य

B.M.A. College, Baheri, Darbhanga

Date:- 21/05/202

B.A. II, (Gen & Hons).

By: Dr. Rajesh Ku

Dept. of Sociology

Sociology

विषय:- अगस्त कॉम्ट के चिन्तन की तीन अवस्थाओं का नियम।

कॉम्ट ने इस नियम को समूह स्वभाव का एक प्रमुख समाजशास्त्रीय कानून माना है और तीन स्तरों एवं या तीन अवस्थाओं के नियम को प्रतिपादित किया है। इस नियम के अनुसार सामाजिक विकास का अध्ययन कॉम्ट ने मानव के बौद्धिक विकास के आधार पर किया है।

- **धार्मिक स्तर**: यह मानव के चिन्तन की प्रथम अवस्था थी जो आदिमानव के चिन्तन की स्थिति को अभिव्यक्त करती है। इस समय मानव मस्तिष्क का पूर्ण विकास नहीं हुआ था। इसलिए वह सभी भौतिक एवं सामाजिक घटनाओं की व्याख्या धार्मिक आधार पर करता था। मनुष्य प्रत्येक घटना के पीछे किसी न किसी अलौकिक शक्ति, दैवी शक्ति एवं प्रेतात्मा की कल्पना करता था। इस अवस्था में प्रेतवाद, बहुदेववाद एवं एकेश्वरवाद के प्रति भी विश्वास बढ़ा।

- **तात्विक स्तर**: यह अवस्था धार्मिक एवं वैज्ञानिक अवस्था के बीच की स्तर थी। इस अवस्था में मनुष्य के मस्तिष्क के विकास के साथ-साथ मनुष्य की तर्कशक्ति बढ़ती गई। इस अवस्था में मनुष्य यह सोचने लगा कि प्रत्येक घटना के पीछे ईश्वर प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित नहीं होता वरन अमूर्त स्वरूप में सब जगह विद्यमान होता है और इस दुनिया में जो कुछ भी घटित होता है, उसकी व्याख्या ईश्वर के आधार पर नहीं बल्कि अदृश्य, निराकार, या अमूर्त शक्तियों के आधार पर करता है। दोनो अवस्था मे अन्तर सिर्फ इस बात का है कि प्रथम अवस्था में ईश्वर की कल्पना मूर्त रूप में की जाती है जबकि दूसरी अवस्था में ईश्वर की कल्पना अमूर्त रूप में की जाती है। इस अवस्था में मानव के मस्तिष्क में भावना की प्रधानता होती है।

- **प्रत्यक्षवादी या वैज्ञानिक अवस्था**: इस अवस्था में मनुष्य किसी भी सामाजिक घटना को तर्क एवं वैज्ञानिक आधार पर करता है। यहाँ निरीक्षण, परीक्षण, वर्गीकरण एवं सामान्यीकरण की विधि के आधार पर ही किसी घटना को सही या गलत ठहराने की कोशिश की जाती है। इस स्तर पर ज्ञान का संग्रह ही एक मात्र उद्देश्य होता है। यहाँ धार्मिकता एवं तात्विकता काफी नीचले स्तर पर आ जाती है। क्योंकि प्रत्यक्षवादी ज्ञान हमेशा वास्तविक तथ्यों से परिचय कराते हैं।